

B.A. 4th Semester (Economics)

कैम्ब्रिज नगद शेष सिद्धान्त

मार्शल, पीगू रार्वटसन ने तथा कीन्स ने मुद्रा परिमाण सिद्धान्त का एक नया रूप प्रतिपादित किया जिसे कैम्ब्रिज नगद शेष प्रत्यागम के नाम से जाना जाता है। पीगू ने इस सिद्धान्त का व्यवस्थित प्रतिपादन 1917में प्रकाशित स्वयं के लेख 'The value of money and its function' में किया तथा मार्शल ने 1923 में अपने लेख **Money, credit and commerce** में प्रतिपादन किया इस विश्लेषण का ज्ञान होने के बावजूद यह स्वीकार करना उपयुक्त नहीं है कि कैम्ब्रिज दृष्टिकोण के प्रतिपादन के प्रमुख अर्थशास्त्री प्रो० पीगू थे वास्तविकता यह है कि 1888 में **Gold and silver commission** तथा 1889 में **Indian currency committee** में साक्ष्य के रूप में इस दृष्टिकोण का उल्लेख मार्शल ने किया था जिसके आधार पर पीगू ने इस सिद्धान्त का एक सुव्यवस्थित आकार 1917 में प्रदान किया, अतः इसी कारणों के परिणाम स्वरूप मार्शल को इस दृष्टिकोण के प्रतिपादक अर्थशास्त्री के रूप में स्वीकार करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

कैम्ब्रिज सम्प्रदाय के अर्थशास्त्री मूल रूप से फिशर से असहमत नहीं थे वे भी मुद्रा की मात्रा तथा मूल्य स्तर के बीच सम्बन्ध पर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किये और उनका भी यही निष्कर्ष था कि मुद्रा का मूल्य उसकी मात्रा से विपरीत सम्बन्ध स्थापित करती है या मुद्रा की मात्रा तथा मूल्य स्तर के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने फिशर लेन देन विश्लेषण से कुछ तथ्यों पर असहमति प्रकट किया चूंकि कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने यह व्यक्त किया कि फिशर का लेन देन प्रत्यागम स्पष्टतया मुद्रा के मांग और उसकी पूर्ति सिद्धान्त से सम्बन्धित नहीं है जो कि उक्त सिद्धान्त के प्रतिपादन में अपना प्रमुख स्थान स्थापित करती है अतः कैम्ब्रिज सम्प्रदाय के अर्थशास्त्रियों के अनुसार **Demand & Supply Approach** को स्वीकार करने पर **Real** और **Monetary sector** के मध्य द्वैत की स्थिति नहीं आ सकती।

स्पष्टतया यह कहना उपयुक्त है कि कैम्ब्रिज सम्प्रदाय के अर्थशास्त्रियों का लक्ष्य परम्परागत मुद्रा परिमाण सिद्धान्त की आलोचना करना नहीं था मात्र कुछ संसोधन करते हुए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप फिशर के सिद्धान्त को मांग पक्ष बनाना था जिससे फिशर का विनिमय समीकरण अधिक स्वीकार्य हो सके।

कैम्ब्रिज सम्प्रदाय के अर्थशास्त्रियों ने स्पष्टतया यह प्रतिपादित किया कि सभी अन्य वस्तुओं के समान मुद्रा के मूल्य का निर्धारण उसकी मांग और पूर्ति शक्तियों के क्रियान्वयन के द्वारा होगा। चूंकि मुद्रा की पूर्ति वाहय रूप से मौद्रिक अधिकारियों या अन्तराष्ट्रीय स्वर्णमान से समन्वित रहने के कारण निर्धारित होती है अतः मुद्रा के मूल्य निर्धारण में मुद्रा की पूर्ति का योगदान लगभग नहीं ही होगा, इसलिए इन अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा के मूल्य

B.A. 4th Semester (Economics)

निर्धारण में मांग पक्ष को प्रमुख तत्व के रूप में स्वीकार किया। कैम्ब्रिज दृष्टिकोण उपरोक्त कारणों के परिणामतः मांग दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मुद्रा के मांग का स्पष्टीकरण करने के लिए परम्परागत अर्थशास्त्रियों ने लेन देन प्रत्यागम में जहां मुद्रा के विनियम कार्य को माध्यम बनाया वही कैम्ब्रिज विश्लेषण विनियम माध्यम कार्य के द्वारा नहीं बल्कि *मूल्य के संचय के रूप में मुद्रा के कार्य की स्वीकारोक्ति की*। गौरतलव है कि यदि मुद्रा की पूर्ति वाहय रूप से निर्धारित हो तो कैम्ब्रिज विश्लेषण की अवस्था में यह कहना गलत नहीं होगा कि मुद्रा के मूल्य या मूल्य स्तर का निर्धारण मुद्रा के मांग के द्वारा होगा। अतः सम्पूर्ण कैम्ब्रिज विश्लेषण मुद्रा के मांग पक्ष पर केन्द्रित है।

कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा की मांग से तात्पर्य मुद्रा को अपने पास नकद शेष से है इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति, समाज या फर्म अपनी आय का एक निश्चित भाग या अनुपात (**k**) नगद शेष के रूप में रखता है जिससे वह कुछ निश्चित वस्तुओं पर अधिकार कर सके वह जो तरल मुद्रा मुद्रा (**k**) के रूप में रखता है वह निष्क्रिय नगद शेष होता है क्योंकि **k** नगद शेष की इकाई **Time** होती है।

उल्लेखनीय है कि जो कोई व्यक्ति अपने पास जितना मुद्रा रखता है वह उसकी मात्रा से सम्बन्धित नहीं होता वास्तविक रूप में वह उन वस्तुओं की मात्रा रखने में खुशी होता है जिसको अपनी इच्छानुसार क्रय करके नगद शेष प्राप्त कर सके।

मार्शल के अनुसार व्यक्ति कितना मुद्रा की मांग करेगा यह मूल्य स्तर द्वारा निश्चित होगा। यदि मूल्य स्तर नीचा हो तो वह कम नगद शेष रखेगा।

यदि **A** व्यक्ति अपनी (Y_1) आय भाग का k_1 भाग, **B** व्यक्ति अपनी Y_2 भाग का k_2 भाग तथा **n** व्यक्ति अपनी आय Y_n का k_n भाग मुद्रा शेष के रूप में रखें तो सभी व्यक्तियों के द्वारा नगद शेष के रूप में रखी गयी मुद्रा की मात्रा.

$k_1y_1+k_2y_2+ \dots +k_ny_n$ होगा और यदि हम $y_1y_2y_n$ को **Y** से व्यक्त करें तथा k_1,k_2,k_n के औसत को **k** से व्यक्त करें तो हम यह भी कह सकते कि समाज द्वारा नगद शेष के रूप में मुद्रा की मांग ky होगी। इस प्रकार मुद्रा की मांग $M_d=k_y$ होगा जिसमें **Y** राष्ट्रीय आय का मौद्रिक मूल्य है। **k** स्थिर है तथा यह आय का वह अनुपात है जो लोग अपने पास नगद शेष के रूप में रखना चाहते हैं

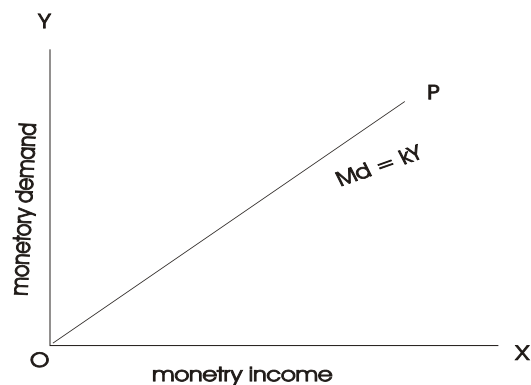
$Y = P_y = P$ सामान्य मूल्य स्तर तथा **Y** - Real National Income है।

$M_d = K_y$

$M_d = Kpy$ मार्शल का सरल दृष्टिकोण इसी रूप में प्रदर्शित है।

B.A. 4th Semester (Economics)

उल्लेखनीय है कि नकद शेष दृष्टिकोण मुद्रा की मांग तथा मुद्रा की पूर्ति के एक निश्चित समय बिन्दु से सम्बन्धित है न कि फिशर के समान समयावधि से। इस प्रकार कैम्ब्रिज माडल में Velocity, Transaction Velocity or Income Velocity का कोई स्पष्ट योगदान स्वीकार नहीं किया गया है।



Income velocity का सम्बन्ध Period of Time से है और k की इकाई समय से है इसलिए k का सम्बन्ध Income Velocity के Reciprocal से होगा।

इस प्रकार मुद्रा का मूल्य वहां निर्धारित होगा जहां मुद्रा की मांग मुद्रा की पूर्ति के बराबर होगा or $M_s = M_d = P$

$$[M/p = ky]$$

$$[1/P = ky]$$

$$[P = M/ky]$$

पीगू ने अपना निम्न समीकरण प्रस्तुत किया—

$$P = KR/M$$

P. मुद्रा की क्रय शक्ति या मुद्रा मूल्य

R. वास्तविक आय गेहूँ के रूप में

K. नगद शेष

M. Legal Money

B.A. 4th Semester (Economics)

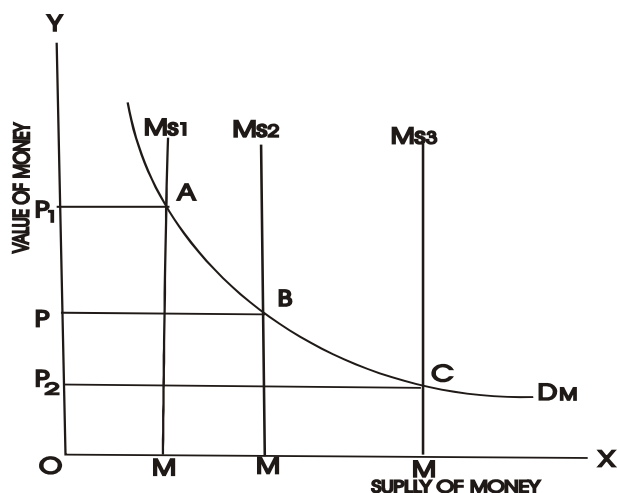
पीगू के अनुसार मुद्रा के मूल्य तथा मुद्रा की मात्रा में विलोम सम्बन्ध होगा।

$$2- P=M/KR$$

P. Pricelevel.

$$M\uparrow = P \uparrow$$

$$M\downarrow = P \downarrow$$



रेखाचित्र में मुद्रा की माँग वक्र D_M नीचे की ओर गिरती जा रही है जो आयताकार अतिपरवलय के रूप में है। जिस पर मुद्रा की कयशक्ति और मुद्रा के मूल्य का गुणनफल, कुल व्यय आयताकार अर्थात् इकाई के बराबर होगा। $(OM_1 \times OP_1=1, OM_2 \times OP=1, OM_3 \times OP_2=1)$ मुद्रा की माँग वक्र पर लोच इकाई के बराबर होगी। According to pigou elasticity of demand of Money is =1

$$3-P=KR/M[C+h(1-c)]$$

C. जनता के पास मुद्रा

h. बैंक की नगद मुद्रा

1-c जनता की बैंक में रखी गयी मुद्रा

कैम्ब्रिज मॉडल में कीन्सीय योगदान : कीन्स कैम्ब्रिज स्कूल के अर्थशास्त्री थे जिनका नाम Q.T.M के पुनर्स्थापित करने वाले अर्थशास्त्रियों या कैम्ब्रिज दृष्टिकोण के प्रतिपादक अर्थशास्त्रियों मार्शल, पीगू, रावर्टसन आदि के साथ जोड़ा जाता है

B.A. 4th Semester (Economics)

Tract on Money(1924) में Keynes मे स्वयं सिद्ध समीकरण जो Q.T.M. से ही सम्बन्धित है में $n=Pk$ प्रतिपादित किया।

n - चलन में मुद्रा, P - मूल्य स्तर तथा k -उपभोग इकाई का वह भाग है जिस पर अधिकार प्राप्त करने के लिए निष्क्रिय मुद्रा शेष की मात्रा रखी जाती हैं । समयोपरान्त **Tract on Money** में ही कीन्स ने अन्य अर्थशास्त्रियों से अलग व्याज दर को समायोजित करते है जिसका योगदान मूल्य निर्धारण में स्पष्ट स्वीकार करते है। **Keynes** के अनुसार (r) व्याजदर वह आधार है जिस पर कोई विवेक पूर्ण व्यक्ति वस्तुओं पर मुद्रा के द्वारा नियन्त्रण रखता है । k तथा k^1 उपभोग इकाई का वह भाग जिसे लोग **Bank Deposite** में रखते है।)

Tract on Monetary Reform में मुद्रा के मूल्य निर्धारण के सम्बन्ध में कीन्स एक नया समीकरण प्रस्तुत करते है।

$$n=P(k+rk^1)$$

r - नकद शेष अनुपात **C.R.R**

K^1 - उपभोग वस्तुओं की इकाइयों को प्रदर्शित करता है।

यदि K , K^1 , r अपरिवर्तित हों तो निश्चित रूप से n और P एक ही अनुपात में परिवर्तित होंगे। वैसे भी अल्पकाल में इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं है।

कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों के समीकरणों की आलोचनाएँ (Criticisms of Cambridge Equations) :-

(1) स्थैतिक सिद्धान्त (**Static Theory**) – यह एक ऐसा पर्याप्त मौद्रिक सिद्धान्त नहीं है जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था में मूल्यों की प्रावैगिक प्रवृत्ति की व्याख्या की जा सकती हो। यह प्रावैगिक संसार की जटिल आर्थिक समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ है।

(2) सट्टा उद्देश्य (**Speculation Motives**) – इसमें मुद्रा की उस माँग पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया है जो सट्टेबाजी के उद्देश्य के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और जिनका मुद्रा की कुल माँग को निर्धारित करने में एक विशेष महत्व होता है।

(3) अनुचित मान्यता (**Unreal Assumptions**) – फिशर के समीकरण की भाँति इस समीकरण में भी K तथा T को निश्चित मान लिया गया है जो सर्वथा अनुचित है।

B.A. 4th Semester (Economics)

(4) निक्षेपों की श्रेणी (**Types of Savings**) – प्रो. कीन्स के अनुसार कैम्ब्रिज समीकरण में उन कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं दिया गया है जो विभिन्न वर्ग के निक्षेपों (अर्थात् बचत, चालू तथा स्थायी जमा) के अनुपात में होने से उत्पन्न होती हैं।

(5) ब्याज दर (**Rate of Interest**) – कैम्ब्रिज दृष्टिकोण ब्याज-दर की भूमिका को मान्यता देने में असफल रहा है। इससे ऐसा लगता है कि मुद्रा की पूर्ति में परिवर्तन कीमतों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते हैं जो कि उचित नहीं है। डॉन पेटिन्कन के मतानुसार नकदी शेष समीकरण में ब्याज की दर की अपेक्षा यह भ्रम पैदा करती है कि इस दर की प्रतिष्ठित स्थिरता केवल उस विशेष परिस्थिति में रहती है, जब वह (ब्याज दर) मुद्रा की माँग को प्रभावित नहीं करती।

(6) अपूर्ण सिद्धान्त (**Incomplete Theory**) – नकद शेष सिद्धान्त एक अपूर्ण सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त नकद कोषों (**K**) को प्रभावित करने वाले केवल एक तत्व अर्थात् वर्तमान आय (**R**) को महत्व देता है परन्तु नकद कोष कई अन्य तत्वों, जैसे— कीमत-स्तर, मौद्रिक आदतें, व्यावसायिक ढाँचे आदि पर निर्भर करता है। इस सिद्धान्त में इन तत्वों की अवहेलना की गयी है।

(7) मूल्य सिद्धान्त तथा मौद्रिक सिद्धान्त के समन्वय का अभाव (**Lack of Integration of Theory of Value and Theory of Money**) – डॉन पैटिन्कन के अनुसार, “नकद शेष समीकरण के मूल्य सिद्धान्त या सापेक्ष मूल्यों तथा मुद्रा सिद्धान्त या सामान्य कीमत-स्तर के समन्वय का अभाव पाया जाता है।”

(8) व्यापार-चक्रों की व्याख्या करने में असमर्थ (**Fails to explain Trade Cycles**) – इस सिद्धान्त से यह विदित नहीं होता कि अर्थव्यवस्था में तेजी व मंदी अर्थात् व्यापार-चक्र क्यों आते हैं। अन्य शब्दों में, यह सिद्धान्त दीर्घकालीन परिवर्तनों की व्याख्या करता है परन्तु अल्पकालीन परिवर्तनों को स्पष्ट नहीं करता।

(9) मुद्रा की माँग की लोच इकाई (**Unitary Elasticity of Demand for Money**) – इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा के मूल्य में उसी अनुपात में परिवर्तन होता है जिस अनुपात में मुद्रा की माँग में परिवर्तन होता है अर्थात् इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की माँग की लोच इकाई के बराबर होती है परन्तु वास्तविक जीवन में अर्थव्यवस्था में निरन्तर होने वाले परिवर्तनों के कारण मुद्रा की माँग की लोच इकाई के बराबर नहीं रहने पाती है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के होते हुए भी निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि यह सिद्धान्त कीमत-स्तर के निर्धारण की विस्तृत तथा वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।